Rohtas Mahila College, Sasaram, 29.07.20
Dr. Aman Murmu, Dept of Psychology, B.A. part II H
Pr. I, 2019-20

Page No: .... Date: .../.../...

(Topic — समस्या समाधान में तत्परता की भूमिका)

चिंतन या समस्या समाधान में मानसिक तत्परता का बहुत बड़ा हाथ होता है। किसी समस्या के समाधान के पहले व्यक्ति एक मानसिक तैयारी करता है कि वह अपनी समस्या समाधान के लिए किस प्रकार का व्यवहार करें। उसकी इसी मानसिक प्रक्रिया को तत्परता कहते हैं। हिलगार्ड (Hilgard) के अनुसार "तत्परता का अर्थ किसी कार्य विशेष या अनुभव के प्रति एक प्रारंभिक अभियोजन या तैयारी है।

1. तत्परता के लाभ या गुण (Advantages of Set):
तत्परता का धनात्मक मूल्य सरलीकरण के रूप में देखा जाता है। समस्या का समाधान करते समय जब प्राणी में प्राणी में सही तत्परता का निर्माण होता है तो प्राणी को सही प्रतिक्रिया करने और गलत प्रतिक्रिया से बचने का लाभ होता है। तत्परता के धनात्मक मूल्य को प्रमाणित करने के लिए एक प्रारंभिक अध्ययन वार्ट (Wart) ने किया। इन्होंने अपने अध्ययन में देखा कि नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों को अपनी समस्या के समाधान में अधिक सुविधा का अनुभव हुआ। इसकी व्याख्या करते हुए वार्ट (Wart) ने बताया कि प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों में अभ्यास के कारण सही तत्परता उत्पन्न हुई, जिससे उन्हें समस्या के समाधान में आसानी हुई।

मायर (Maier) ने अपने अध्ययन में देखा कि सही दिशा का ज्ञान हो जाने पर समस्या का समाधान बहुत आसान हो जाता है। लेकिन प्राणी गलत दिशा

Date: ..../..../....

को अनुमान लगा लेता है तो समस्या का समाधान कुछ कठिन बन जाता है और उसे अपनी दिशा में परिवर्तन लाना पड़ता है और तभी समस्या हल हो पाती है।

2. तत्परता की हानि या दोष (Disadvantages of set):-

गलत तत्परता अथवा गलत दिशा से समस्या समाधान में बड़ी हानि होती है। इसे तत्परता का अवरोधक प्रभाव अथवा नकारात्मक मूल्य कहते हैं। इस प्रकार की तत्परता उत्पन्न होने पर प्राणी गलत दिशा में प्रयास करने लगता है, जिससे समस्या का समाधान कठिन हो जाता है और समस्या तब तक हल नहीं हो पाती है जब तक की कि उस तत्परता को छोड़कर सही दिशा में सक्रिय नहीं होता है। डंकर (Duncker) ने तत्परता के इस अवरोधक प्रभाव को कार्यात्मक स्थिरता की संज्ञा दी है। कारण यह है कि गलत तत्परता के उत्पन्न हो जाने से प्राणी एक ही दिशा में स्थिर होकर व्यवहार करने लगता है। वह दूसरी दिशा के प्रति उदासीन (indifferent) बन जाता है। वह समस्या के समाधान के दूसरे उपायों के प्रति मानो अंधा बन जाता है।

Scanned with CamScanner